नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

हिंदी विश्वविद्यालय में मनायी भारतेन्दु जयंती

भारतेन्दु ने नवजागरण के बीज बोये – चित्रा मुद्गल

वर्धा, 11 सितंबर 2018: भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने अभिव्यक्ति की अनेक विधाओं हस्तक्षेप कर नवजागरण के बीज बोये है। नाटक, पर्यटन, अभिनय, साहित्य आदि विधाओं में उन्होंने अपना योगदान देकर कम आयु में चमत्कारिक जीवन जिया है। उक्त विचार वरिष्ठ कथाकार चित्रा मुद्गल ने व्यक्त किये। वह महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी

विश्वविद्यालय के गालिब सभागार में प्रदर्शनकारी कला विभाग की ओर से आयोजित भारतेन्दु जयंती कार्यक्रम में बतौर उदघाटक एवं मुख्य अतिथि बोल रही थी। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने की। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में प्रो. अखिलेश कुमार दुबे, विशेष उपस्थिति के रूप में कार्यकारी कुलसचिव प्रो. के. के. सिंह की थी। इस अवसर पर विभाग के एडजंक्ट प्रोफेसर राकेश मंजुल, संयोजक डॉ. सतीश पवड़े, प्रो. अवधेश कुमार मंचासीन थे।

मुख्य वक्ता प्रो. अखिलेश कुमार दुबे ने कहा कि भारतेन्दु की चेतना की पकड़ धारदार है। उनका लोक और शास्त्र का ज्ञान व्यापक है। उन्होंने अनेक भाषाओं में कविता लिखी। वें प्रयोगधर्मी कवि थे। इस वजह से भारतेन्दु आज भी हमारी चेतना के निकट है। प्रो. अवधेश कुमार ने कहा कि भारतेन्दु में सामाजिक उद्धार की चेतना दिखाई देती है। उन्होंने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। प्रो. राकेश मंजुल ने समाज की उन्नति की बात कही। भारतेन्दु ने

नाटककार के रूप में नाटयक्षेत्र में बड़ा योगदान दिया। कार्यकारी कुलसचिव प्रो. के. के. सिंह ने कहा कि भारतेन्दु

आधुनिक साहित्य के अग्रदूत थे। उनके अंतर्विरोध को समझे के बगैर उनके विचारों का आकलन किया जाना उचित नहीं होगा। अध्यक्षीय उदबोधन में प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा ने कहा कि भारतेन्दु बनारस में मराठी और गुजराती परिवारों के बीच रहे। इस कारण उन्हें भाषाओं का ज्ञान हुआ और उन्होंने लोकभाषा का प्रयोग अनेक

विधाओं में किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अविचल गौतम ने किया तथा आभार डॉ. अश्विनी कुमार सिंह ने माना। कार्यक्रम में अध्यापक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।